अनुक्रमणिका

- समर्पण iii
- आमुख iv-vi
- आभार प्रदर्शन vii-ix
- आत्मनिवेदन x-xi

प्रथम भाग

माँ शाकम्भरी के मन्दिर का इतिहास

प्रथम अध्याय	:	महामाया का प्राकट्य	1-5
द्वितीय अध्याय	:	महामाया ही माँ शाकम्भरी है ।	6-7
तृतीय अध्याय	:	चौहानों की कुलदेवी शाकम्भरी क्यों ?	
		-उत्खनन से प्राप्त इतिहास ।	8-11
चतुर्थ अध्याय	:	शाकंभर या साँभर	12-16
पंचम अध्याय	:	साँभर के लवण ह्रद की उत्पत्ति कथा	
		अ - अनुश्रुतियाँ	17-28
		ब - पृथ्वीराज विजय महाकाव्यम्	28-30
		स - सुरजन चरित महाकाव्यम्	30-36
		द - भू-वैज्ञानिकों के मत	36-37
		य - विवेचना	37-39
षष्ठम् अध्याय	:	अन्न भगवान रो, लूण चौहान रो ।	40
सप्तम अध्याय	:	माता के मन्दिर का युग युगीन इतिहास	41-43
		-वर्तमान मन्दिर का परिचय	43-44
		-शाकम्भरी मूर्ति रहस्य स्तोत्रं	44-45
		-अन्य निर्माण	45-47
		-धार्मिक आयोजन और मेले	47

-नवरात्र पर पढ़े जाने वाले मंत्र 47-51
-चन्द कृत भगवती स्तुति 51-58
-माँ शाकम्भरी की आरती 58-60
-जातरूओं के भजन 60-62
-माँ के धाम पर कैसे पहुँचें 63

द्वितीय भाग

शाकम्भर-अजयमेरू के चौहान राजवंश का संक्षिप्त इतिहास

प्रथम अध्याय : अजयमेरू का दुर्ग : राजस्थान का जिब्राल्टर 65-70
-चौहान राज वंशावली 71-72
द्वितीय अध्याय : राज्य स्थापन का संक्षिप्त परिचय 73-75
-वासदेव से लेकर सोमेश्वर तक 75-90
तृतीय अध्याय : पृथ्वीराज चौहान तृतीय
-राज्यारोहण 91
-नागार्जुन का विद्रोह 92
-भादानकों पर आक्रमण 93
-जेजाकभुक्ति पर आक्रमण 93-94
-परमारों और चालुक्यों के विरूद्ध युद्ध 94-95
-गौरी की सियालकोट विजय 95-97
-तराइन का प्रथम संग्राम और विजय 97-105
-श्रापभ्रष्ट अप्सरा संयोगिता 105-114
-अजयमेरू शक्ति का क्षरण 114-115
-तराइन का द्वितीय युद्ध 115-118
चतुर्थ अध्याय : अजयमेरू का पतन 119-121
-गोविन्दा अजयमेरू का सामन्त 121
-हरिराज की पराजय और पटाक्षेप 122

परिशिष्ट

अ : पृथ्वीराज चौहान का स्मारक, तारागढ़ 123-124
ब : संदर्भ ग्रंथ सूची 125-126